999NBE

पाठ 12

अपन चीज के पीरा

–संकलित

ढिल्ला चरइया–बेंवारस गरुवा मन खेत–खार, बारी–बखरी के बिंदरा–बिनास कर देथें। कोनो–कोनो गोसइंयाँ मन जानबुझ के अपन गाय–गरु ल रात म छेल्ला चरे बर ढिल देथें। जेकर नुकसान होथे, उही एकर दुख–पीरा ल जानथे। अइसन नइ करना चाही । ये कहानी म इही संदेस दे गेहे।

परसराम के जस नाम तस काम । जेन मेर नहीं, तेन मेर लाठी अँटियाथे अउ बात–बात म अँगरा उगलथे। सोज गोठियाय ल तो जानय नहीं,जुच्छा अटेलही मारथे। परसराम जेन लहो लेथे तेन तो लेथे,ओकर ले जादा लहो लेथे ओकर गाय 'गोदवरी।' परसराम करा कोरी भर गाय हे। फेर गोदवरी के अलगे मिजाज हे। ढिल्ला चर–चर के खूब मोटाय हे। लाली रंग,बड़े–बड़े सींग, हुमेले बर आघू। छिल–छिल दिखथे ओखर सरीर। काठा भर के काचर, कसेली भर दूध देथे। एकरे भरोसा परसराम के गोसइन दसरी ह मार अंग भर गहना ओरमाय हे। बड़ खुस हे परसराम अउ दसरी। खुस नइ हे त ऊँकर बेटा रमेसर। रोज–रोज के बद्दी ले हलाकान रहिथे। ददा–दाई संग बातिक–बाता घलो हो जाथे। फेर नइ सुधरने वाला हे परसराम।

आज फेर बड़े बिहनिया ले रुपउ ह बद्दी दे बर आय हे। ओकर कछार–बारी के भाँटा–मिरचा के फेर सत्यानास कर दे हे गोदवरी ह। फूले–फरे के दिन म चर दे हे। रुपउच ह नहीं,तीर–तकार के जम्मो खेत–खार वाले गोदवरी के मारे हलाकान हें। गोदवरी कोजनी कइसे मनखे कस अपन मुड़ के भार राचर ल उसाल देथे अउ घुसर जाथे बारी–बखरी म। कोनो गम नइ पाय। अउ थोरको ककरो आरो पाथे,तहाँ ले पूछी उठाके पल्ला भागथे। कोनो ओकर पार नइ पाय। पल्ला भाग के कोठा म घुसर जाथे। बद्दी देवइया ल परसराम उल्टा गारी देवत कहिथे–''तोर बारी म गाय ह चरत रहिस त पकड़ के लाने हस का ? बड़ा आय हस बद्दी देवइया। मंघारे ल देहूँ लउठी म,भाग जा।'' रुपउ मने–मन म संकलप लेथे,एक न एक दिन पकड़ के देखाहूँ तोर गाय ल।

बारी जाते साठ रुपउ भिड़गे गाय पकड़े के जतन म। धरिस कुदारी,लानिस झउहा–रापा। जेन मेर ले गाय बारी म बुलके बर पइधे रहय,तेने मेर गढ़हरा खने बर भिड़गे । बासी–पेज खाय ल छोड़ दिस । ओला तो परसराम के बात लगे रहय। बने गढ़हरा खन के ओला डारा–पाना म तोप दिस,तभे घर गिस। एती संझा बेरा गोदवरी बरदी ले लहुटिस त परसराम गोदवरी ल दुहिस–बाँधिस अउ सोवा परती म गाय के गेरवा ल छटका दिस। चलिस गोदवरी अपन ठीहा म। लगथे गोदवरी असन गाय के चाल–चलन ल देखके सियनहा मन हाना पारे होहीं–'पइधे गाय कछारे जाय।' रुँधना ले बुलकत गोदवरी गढ़हरा म झपागे। भकरस ले बाजिस। गोदवरी बाँय ऽऽऽ कहिके नरिअइस। रुपउ कुँदरा के बाहिर कउड़ा मेर बइठे आगी तापत रहय। रुपउ जान डरिस, अब कहाँ जाही ? एक मन डर्राय कहूँ गाय के गोड़ टूट जाही त उल्टा मोर करलइ हो जाही। मर जाही त गउ हत्या लगही। आधा बल, आधा डर करत आके रुपउ देखथे त गोदवरी गढ़हरा म अँवरी–भँवरी बियाकुल घूमत रहय।

मुँहझुलझुल बिहनिया परसराम खोर के कपाट ल खोलथे त गोदवरी नइ रहय। परसराम कहिथे–''आज गोदवरी कइसे नइ अइस ओ,रमेसर के दाई ?''दसरी ह कहिथे–''को जनी हो। मोर मन तो भुस–भुस जाथे। कहुँ रुपउ ह बाँध–छाँद तो नइ दिस होही।'' परसराम कहिथे–''का ला? गोदवरी ल ? ओकर दस पुरखा आ जही तभो गोदवरी ल नइ बाँध सकय।''

एती बारी के गढ़हरा म अभरे गोदवरी बछरु के मया म बाँय–बाँय नरियावय। बाहिर–बट्टा अवइया–जवइया,नहवइया कतकोन मनखे रुपउ के बारी म सकलागें। समेलाल ह कहिथे–''वाह रुपउ ! आज अच्छा फाँदा खेले। आज गरब उतरही परसराम के। कहाँ जाही ? गाय ल खोजत–खोजत सवाँगे आही।'' ठउँका ओतके बेर तेंदूसार के लाठी धरे परसराम आगे। देखथे,गाय गढ़हरा म गिरे परे हे। परसराम ल देखके गोदवरी बाँय–बाँय नरियाय लागिस। रुपउ कहिथे–''कइसे परसराम कतका दिन ले ककरो लइका के मुँह म पैरा ल गोंजबे। मोर गाय ल कब पकड़े हस कहिके अँटियावस, अब बता।'' परसराम के मन म आगी धधकय,फेर का करे, चुपेचाप रहय। छक्का–पँजा बंद। मूड़ी ल नवाय रहय। समेलाल कहिथे–''गाँव भर के खेत–खार,बारी–बेला के बहुत बिंदरा–बिनास करे हस तैंहा,अउ तोर गाय ह। अब काय कहिथस बोल। अभो गरजबे ? गाँव म रहना हे त बने रह। खेती–खार के चरइ अउ उपर ले अँटियइ नइ बने।''

कोनो बतइन त दसरी अउ रमेसर घलो बारी म आ गें। रमेसर मने–मन भारी खुश होत रहय। चलो आज चोर पकड़इस। ददच आय त अनियाँव के पाट थोरे दाबबे। अनियाँव 'त' अनियाँव होथे। एक झन सियान कहिथे–''इही मेर नियाँव होना चाही। परसराम गजब अँटेलही बघारथे। मसमोटी मारथे। आज आइस ऊँटवा पहाड़ तरी। ये ला डाँड़े ल परही। एकर भरभस टूटना चाही।'' ततके म दसरी जेन पहिली फुनुन–फुनुन करे,गारी बखाना दे,तेन हाथ जोर के कहिथे–''ददा हो, गलती होगे। बछरू भूख के मारे नरियावत हे। गाय ल निकाल देव। जेन नियाँव करहू, पाछू करत रहू।'' समयलाल कहिथे–''नहीं नियाँव तो अभी होही भउजी। तुँहर धरे के न बाँधे के।''परसराम

उपरछावा कहिथे–''हव ददा, जेन डाँड़ बाँधहू,मैं कसूरवार हँव, देहूँ।''चार झन सुनता होके परसराम ल दू सौ रुपिया डाँड़िन अउ बरजिन–''आज ले काकरो खेत–खार ल चराबे झन,गाय ल ढिलबे झन,समझे।'' दसरी तुरते दू सौ रुपिया लान के पटाइस। गोदवरी ल निकालिन अउ घर आ गें।

एक दू अठोरिया काहीं नइ जनइस। परसराम गाय ल बाँध के राखे। रमेसर सोंचिस– चलो अच्छा हे,ददा के बेवहार बदलिस। पर के खेत–खार चराय ले पेट नइ भरय,उल्टा सराप लगथे। एती ढिल्ला चरे–चरे टकराहा गोदवरी अब दुबराय लागिस। घर के चारा ओला ओलहाय नहीं। गाय के पकती–पकती झके लागिस। दूध घलो सुखाय लगिस। दसरी घलो दुबराय लागिस। चोर ह चोरी ल छोड़ दिही त ओला कल नइ परय, तइसे परसराम के हाल। सोवा परती गोदवरी करा जाय अउ ओकर गेरवा ल छटकाय के उदिम करे। ओ एक छिन सोचे –नहीं अपजस लेना ठीक नइ हे। गेरवा छोरे बर ओकर हाथ ह ठोटके। दूसर छिन सोंचे–चरन दे न, रोज–रोज थोरे पकड़ाही । ठोटकत–ठोटकत एक दिन ओकर हाथ ले फेर गेरवा छूटगे। गोदवरी फेर ढिल्ला। फेर बद्दी,रमेसर ल बड़ा दुख होय। एक दिन रमेसर के अपन दाई–ददा संग बनेच झगरा होगे। परसराम कहि दिस–''हरिचंद बने म पेट नइ भरे बेटा।'' रमेसर कहिथे–''नहीं ददा ! सबला अपन चीज के पीरा हे। कोनो तोर बारी–बेला,खेत–खार ल चराही त तोला नइ बियापही ? तोला नइ पिराही का ?'' ''वाह रे! मोर धर्मात्मा बेटा'' कहिके परसराम हाँस दिस। परसराम के हाँसी रमेसर के हिरदे म बँभूर काँटा कस गड़गे।

अठुरिया पाछू गाँव म मड़इ होइस । रतिहा दइहान म नाचा होत रहिस। जेवन करके सब झन नाचा देखे ल चल दिन। दसरी ह अपन टूरी ल भेज के पहिली ले आघू म पोता बिछवा दे रहिस। लइका ल धरके उहू पहुँचगे नाचा देखे ल। परछी म सोये रमेसर टुकुर–टुकुर कोजनी का ला देखत रहय परसराम कहिथे–''नाचा देखे ल नइ जास रमेसर ?'' रमेसर कहिथे–''अच्छा नइ लगे ददा,नइ जाँव।'' ''ले नइ जास त तँय घर ल राख। मैं जात हँव। एकात गम्मत देख के आहूँ।'' अइसे कहिके परसराम बंडी पहिरत निकलिस। कोठा डहर गिस अउ गोदवरी के गेरवा ल छटका दिस। गोदवरी निकलगे अपन बूता म अउ परसराम नाचा डहर निकलगे। रमेसर मन म सोचथे, आज तो कुछ उदिम करेच ल परही। अपन जिनिस के का पीरा होथे, ये तो ददा ल सिखोयेच ल परही।

रमेसर उठिस अउ कोठा म जाके सब्बो गाय–गरुवा ल ढिल के अपने बारी म ओइला दिस। भाँटा,मिरचा फूलत–फरत रहय,सेमी के नार घऊदे रहय,तेमा झोफ्फा–झोफ्फा सेमी झूलत रहय। तीर म धनिया घलो महमहात रहय। जम्मो गरुवा अभर गें घर–बारी म। उमान कस चारा चरे लगिन। जम्मो जानवर मिलके बारी ल खुरखुँद कर दिन। रात पछलती रमेसर उठके सबो जानवर ल कोठा म ओइलाके बाँध दिस अउ आके सुतगे।

नाचा देखत दसरी ल नींद आय लागिस तहाँ उठ के आगिस। थोरिकेच पाछू परसराम घलो आगे। लइका मन नाचा देखते रहिन। बिहनिया परसराम उठके बारी डहर गिस,त बारी ल देखके

अकबकागे। दसरी ल बारी म लेग के देखाथे। खुरखुँद बारी ल देख दसरी ह रोय लागिस। अउ रो–रोके सरापे–बखाने लागिस –''काकर गरुवा आय तेन सरी भाँटा मिरचा, सेमी ल चर के बारी के बिंदरा–बिनास कर दिस। ओकर डेहरी म दिया झन बरतिस। ओला खोजे पसिया झन मिलतिस।'' परसराम घलो बेकलम–बेकलम गारी बके लागिस।

एती रमेसर खटिया ले उठिस अउ बारी डहर जाके दाई ल कहिथे–''काकर डेहरी के दिया ल बुझावत हस दाई ? तैं सरापत–बखानत हस दाई त तोरे डेहरी के दिया बुताही,तोरे गाय–गरुवा ह बारी ल चरे हे अउ मैं चराय हँव। आज तुँहरे गाय–गरुवा ह, तुँहर बारी–बेला ल चरे हे त तुँहला कतका बियापत हे। हमर गाय दूसर के बारी–बेला ल चरथे त का ओला नइ बियापत होही ? सबके पीरा एक होथे ददा,सबके मया एक होथे दाई। अपन बरोबर सब ला जानिस अउ सब ला एके मानिस।'

रमेसर के सियानी गोठ ल सुनके ककरो बक्का नइ फूटिस। आज परसराम अउ दसरी अपराधी कस खड़े रहिन। उहू मन ला अपन करनी के ज्ञान होगे। उत्ती डहर ले उवत सुरुज के रूप आज नवाँ–नवाँ लागत रहिस।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

अपगुन	=	अवगुण	अंगरा	=	अंगारा
अटेलही मारना	=	उल्लंघन करना, अवमानना करना, किसी की न मानना	लाहो लेना	=	अति करना,उत्पात करना, मजा लेना
			कोरी	=	बीस
हुमेले बर	=	सींग मारने के लिए	को जनी	=	क्या पता
			उसाल देथे	=	खोल देना,उठा देना
घुसरना	=	प्रवेश करना	पल्ला भागना	=	सरपट दौड़ना
उचाटा मारना	=	कुलाँचे मारना	काँटा–कोराई	=	बाड़ लगाने की काँटेदार टहनियाँ
रुँधना–बाँधना	=	बाड़ लगाना			
कँटही	=	कँटीली	मसमोटी	=	मस्ती
कुँदरा	=	झोपड़ी	गेरवा	=	मवेशियों को बाँधने की रस्सी
			सँवागे	=	स्वयं–साक्षात
काचर	=	थन	कसेली	=	दूध दूहने का बर्तन
ओरमाना	=	लटकाना	बद्दी	=	बदी,बदनामी,आरोप
बातिक–बात	=	झड़प होना,बहस होना	ढिल्ला	=	मुक्त,स्वतंत्र
कोठार	=	खलिहान	मुँहझुलझुलहा	=	प्रातःकाल का हल्का अँधेरा
बेरा चढ़गे	=	सुबह से दोपहर हो गई			

अभरे = संयोग से मिलना या फँस जाना
फुनुन–फुनुन = बड़बड़ाना
सुंता = सुलह,एकमत
छिल–छिल दिखथे = चिकना, चमकदार, सुंदर, स्वस्थ दिखती है।
राचर = लकड़ी, बाँस एवं खपच्चियों से बनाया गया विशेष प्रकार का दरवाजा, जिसे बाड़ी या खलिहान में लगाते हैं।
मुँह म पैरा गोंजना = हक मारना
बिंदरा–बिनास = तहस–नहस करना
डाँड़ = दण्ड
बेकलम–बेकलम = अश्लील–अश्लील
कउड़ा = जमीन में गढ्ढा खोदकर बनाई गई विशेष प्रकार की अंगीठी।

अभ्यास

पाठ से

1. परसराम के सुभाव कइसे रहिस ?
2. गोदवरी ह काकर बारी म जा के चरय ?
3. रुपउ ह गोदवरी ल पकड़े खातिर का जतन करिस ?
4. रुपउ का सोंच के डर्रात रहय ?
5. गाँव वाले मन परसराम ल का डाँड़ डाँड़िन अउ ओला का चेतइन ?
6. रमेसर ह अपन दाई–ददा ले का बात बर बातिक–बाता होवय ?
7. रमेसर ह नाचा देखे बर काबर नइ गिस ?

पाठ से आगे

99IJD2

1. परसराम ह अपन गाय ल रोज रातकुन छेल्ला चरे बर ढिल देवय, ओकर ये काम ह सहीं रहिस के गलत ? अउ गलत रहिस त काबर ? अपन बिचार लिखव।
2. तुँहर घर के कोनो बड़े सियान मन ले परसराम सही कोनो अनियाँव के काम करही ओला तुमन कइसे सुधारहू लिखव।

काम	सुझाव
1.	.....
2.	.....

3. रमेसर के जघा तुमन होतेव त का करतेव ? कारण सहित उत्तर लिखव।
4. तुँहर घर या पास पड़ोस में कोन–कोन बात में झगरा होथे अउ झगरा के सुधार कइसे करे जा सकथे। कक्षा में आपस में बिचारव।

भाषा से

1. खाल्हे लिखाय वाक्य ल पढ़व –
'एक–दू अठोरिया के कुछू नइ जनाइस ।'
ये वाक्य म 'अठोरिया' के अर्थ हे–आठ दिन के समयावधि।
खाल्हे लिखाय शब्द मन ल अपन वाक्य म प्रयोग करव –
हप्ता–के–हप्ता, पंदराही, महिना–के–महिना, साल पुट।
2. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव–
लाठी अँटियाना, लाहो लेना, छिल–छिल दिखना, छक्का–पंजा बंद होना, मुँह म पैरा गोंजना, बात लगना, बेरा चढ़ना।
ये पाठ म अउ गजब अकन मुहावरा के प्रयोग करे गेहे। उनला छाँट के लिखव अउ उँखर अर्थ लिखव।
3. खाल्हे लिखाय वाक्य ल पढ़व –
'अइसन गाय के चाल–चलन ल देखके सियनहा मन हाना पारे होहीं–पइधे गाय, कछारे जाय।'
ये वाक्य म 'पइधे गाय, कछारे जाय', ह एक ठन कहावत आय।
चार ठन छत्तीसगढ़ी कहावत खोज के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव ।
4. खाल्हे लिखाय उदाहरण ल पढ़व अउ समझव–
मनखेच ल – मनखे ल ही इहाँ 'मनखे'शब्द म 'च' प्रत्यय लगा के 'मनखेच' शब्द बनाय गेहे। इहाँ 'च' के अर्थ हे 'ही'। 'च' प्रत्यय लगाके 'मनखे' शब्द उपर जोर दे गे हे। खाल्हे लिखाय शब्द मन म 'च' प्रत्यय जोड़ के नवाँ शब्द बनावव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव – अलगे, काली, मोर, खेत, सबो ।
5. ए पाठ म सामिल मुहावरा मन ले कोनो तीन मुहावरा मन ल लिखके ओखर बरोबर हिन्दी मुहावरा लिखव हिन्दी म ओकर वाक्य प्रयोग करव।
6. ये पाठ के संदेस ल अपन भाषा म लिखव।

योग्यता विस्तार

1. अपनेच भलइ बर सोचइया आदमी सोचथे '' दूसर के भले नुकसान हो जाए फेर मोर काम बन जातिस'' अइसन भावना कतका गलत हे, कतका सही हे। एला ध्यान म रखे लिखे कोनो कहिनी कविता या कोनो महापुरुष के कथन ला खोज के लिखव।
2. परहित सरिस धरम नहि भाई पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। ये चौपई के अर्थ खोज के लिखव। ये म अपन गुरूजी या कोनो सियान के मदद ले सकथव।